ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18 | अंक - 9 | अगस्त- I, 2017 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | रु. 8.00

विश्व में आध्यात्मिक प्रकाश बिखेरती दादी प्रकाशमणि

भारत की भूमि मानवीय विशेषताओं की रत्नगर्भा ही रही है। कुछ दिव्य आभा से आलोकित आत्माओं ने यहाँ जन्म लेकर सभी के जीवन को एक नवीन आभामण्डल प्रदान किया, उन्हें सत्य पथ दिखाया। सबके अंदर गुणों का सौंदर्य और पवित्रता की सुगंध को बिखेरा। आध्यात्मिकता, सौम्यता का प्रकम्पन पूरे विश्व में फैलाकर सबके लिए एक मिसाल बन गए। ऐसे ही दिव्य आभा से आलोकित एक राजयोगिनी, अति आकर्षण करने वाली, चमत्कारिक व्यक्तित्व, जिनको आज भी समस्त मानवजाति अपना प्रेरणास्रोत मानती, ऐसी हमारी दादी जी को मानवता की ओर से अभिवादन अभिनंदन...

जीवन में जब कोई उतार-चढ़ाव आता है तो हम उसको ठीक करने हेतु अलग-अलग तरह की विधियाँ अपनाते हैं। विधियाँ अपनाने के बावजूद भी कुछ न कुछ असंतोष हमारे जीवन में दिखता ही है। इसलिए अध्यात्म की उज्जवल ज्योति उसमें एक उम्मीद के किरण के रूप में काम करती है। ऐसी ही हमारी एक प्रकाश की किरण, प्रकाश पुंज दादी प्रकाशमणि जी रहीं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन से बहुतों के जीवन को प्रकाशित किया।

दादी प्रकाशमणि ने अध्यात्म को अपना जीवन बनाया, और उस जीवन से दुनिया में अध्यात्म की लहर फैला दी। चंदन लगाने वाला और घिसने वाला, दोनों के हाथों में उसकी खुशबू रह जाती है। ऐसे ही दादी किसी का जीवन बनाने के लिए अपना सर्वस्व देने को आतुर रहती थीं। गुणों की सौंदर्य और उसकी खुशबू फैलाना उनकी आदतों में शुमार था। उनके जीवन में रुकावटें और बाधाओं के पहाड़ आए, लेकिन वो अपने साधना पथ पर निरंतर आगे बढ़ती रहीं।

उनका जीवन चरित्र आज सबके लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया है। इस बार हम दादी जी के पुण्य तिथि के दसवें वर्ष में पहुँच चुके हैं। विगत दस वर्षों में दादी जी की स्मृति में, उनके किये गए कर्मों को अपने जीवन में अपनाकर बहुतों ने अपने जीवन को अलौकिक और दिव्य बना लिया। ऐसे वृहद व्यक्तित्व का हमारे बीच ना होना, जैसे ये लगता है कि मानवता की भरपाई कैसे होगी। लेकिन उनकी शिक्षायें आज मानव अपने अंदर भरकर अगर वैसा व्यक्तित्व जीता है, तो उनकी भरपाई थोड़ी बहुत हो सकती है, और ऐसा आज हमारा समस्त ईश्वरीय परिवार कर भी रहा है।

दादी जी अनन्य थीं, चुम्बकीय व्यक्तित्व की धनी थीं। हमारा वश चले तो हम उनको आज भी अपने पास रख लें, लेकिन विधि का विधान ये नहीं कहता। आज उनके गुण और शिक्षायें हमारे साथ जीवंत रूप में हैं। ऐसे चुम्बकीय व्यक्तित्व को हम कितना ना नमन करें।

दादी प्रकाशमणि - एक प्रकाश स्तम्भ

दादी जी के बारे में आज तक अनेकों के द्वारा इतना कुछ कहा और लिखा गया है कि उनको पिरो कर एक लम्बी पुस्तकमाला बनाई जा सकती है। हरेक के पास दादी जी के साथ के अनुभवों के खज़ाने भरे पड़े हैं। दादी ने किसी के साथ एक दिन, एक घण्टा या फिर एक मिनट ही क्यों न बिताया हो, वह पल उस आत्मा के जीवन भर के लिए यादगार बन चुका है। दादी ने किसी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे प्यार और ममता से ओत-प्रोत रुहानी दृष्टिमात्र दी हो, वह दृष्टि उस आत्मा के लिए बाबा के यज्ञ में उसे मददगार बनने के लिए आजीवन प्रेरित करती रही है।

क्या बड़ा-क्या छोटा, क्या भारतीय-क्या विदेशी, क्या टीचर्स-क्या यज्ञ रक्षक भाई, क्या दीदी क्या हमजिन्स, हरेक के दिल में दादी जी ने अपने रुहानी व्यक्तित्व के किसी न किसी पहलू की छटा सदा के लिए छोड़ रखी है।

दादी यज्ञ का श्वांस थी

आज दादी हम सबके बीच साकार रूप में नहीं हैं, पर हम आप सभी से पूछना चाहते हैं कि ऐसा आपने कभी एक पल के लिए भी महसूस किया है? नहीं ना? परमात्मा द्वारा बनाये यज्ञ की दादी श्वांस थी और यज्ञ की श्वांस अभी भी चल रही है तो इसका मतलब है कि दादी जी आज भी हम सबके बीच में हैं।

वे पारसमणि थीं

दादीजी एक ऐसी पारसमणि थीं जो जिसे छू लें उसे सोना बना देने की क्षमता रखती थीं। अक्सर उन्हें एक बार मिलने वाले के मन में सवाल उठता था कि एक बार मिलकर मुझे दादी ने इतना भरपूर किया है तो उनके साथ सदा रहने वाली आत्मायें कितनी भाग्यशाली होंगी, जिनको हर दिन, हर पल भरपूरता का लाभ मिलता होगा। उस आत्मा को यह अफसोस होता कि काश मैं इतना समय दादी जी के साथ बिता पाता और उनसे हर पल कुछ सीखता। हमारे दिलोदिमाग से दादी जी की याद को निकाला नहीं जा सकता, परंतु उनके स्मृति दिवस पर केवल उनको प्यार से याद कर आँसू बहाना या भावुक हो जाना, क्या इससे दादी जी खुश होंगी? या फिर दादी जी के गुणों और कर्त्तव्यों को, उनकी उम्मीदों और आशाओं को, उनके रहे हुए अधूरे वृहद कार्य को हमारे द्वारा पूर्ण होते हुए देखकर खुश होंगी?

इस बार हम उनका दसवाँ पुण्य स्मृति दिवस मना रहे हैं, तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं, अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। अपने को शान्ति की गहराई में ले जाकर अपनी अंतरात्मा को टटोलने की यह घड़ी है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुबान थकती नहीं है। तो क्या उनकी विशेषताओं को मैंने भी अपने जीवन में धारण किया है? अगर हाँ तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी स्मृतियाँ याद होंगी। दादीजी की याद में हम प्रकाश स्तम्भ के आगे जाकर मौन खड़े रहते हैं। उस समय दादी और उनके द्वारा मिली हुई सर्व शिक्षायें चित्र फीती की तरह एक-एक कर अंतर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं, और हमारे यादों के बगीचे के फूलों को नयी सुंदरता और खुशबू से भर देती हैं। उस चित्र फीती का पहला चित्र सामने आता है और दादी जी, हम आप जैसी एक आम व्यक्ति के रूप में दिखती हैं।

उस हसीन चेहरे व चरित्र को सलाम

अगस्त मास आते ही उस हसीन चेहरे व वातसल्य की मर्ति की मधुर यादों भरी स्मृतियों की रील चित्त पर उभरने लग जाती है। गम्भीरता व रमणीकता का बखूबी संतुलन लिये जीवन की यादें तरोताज़ा हो जाती हैं। न जाने इस हसीन चेहरे ने चरित्र के माध्यम से कितनों के उजरे जीवन को चरित्रवान बनाकर उनके जीवन को भी हसीन बनाया होगा! ये कहना बहुत मुश्किल है। किन्तु मैंने ये देखा है और उनके सानिध्य में रहने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। दादी जी के जीवन के जैसी सरलता आज भी किसी और में

- ब्र. कु. गंगाधर

ढूंढ़ने से मिलना मुश्किल सा लगता है। दादी की सहृदयता इतनी निश्छल और निर्मल थी जो सहज ही हरेक के साथ वे दिल से जुड़ जाती थीं।

दादी जी ने परमात्मा की शिक्षाओं को इतना अंगीकार किया जो कि परमात्मा और महात्मा के मध्य अंतर करना भी मुश्किल लगता है। मुझे याद है, एक बार ज्ञानसरोवर अकादमी में संत-महात्माओं के त्रिदिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जहाँ दादी जी ने अपना सम्बोधन महात्माओं के सामने रखते हुए कहा कि असत्य क्या है, झूठ क्या है, यह मैंने कभी जाना ही नहीं। मेरे जीवन में इसकी अविद्या ही रही। 'सत्य है तो जीवन है' यही मेरे जीवन का मूल मंत्र रहा। जब ऐसा सम्बोधन सभी महात्माओं ने सुना तो वे आश्चर्यचकित हो गये। चारो ओर अजीब से, लेकिन सुखद एवं शांति के प्रकम्पन जैसे हॉल में फैल रहे थे और सभी को सुकून की अनुभूति हो रही थी। दादी की इस निखालस और निर्मल वाणी ने जैसे कि चारो ओर वातावरण को खुशनुमा बना दिया।

उसी वक्त मैं ओमशान्ति मीडिया न्यूज़पेपर के लिए रिपोर्टिंग कर रहा था। मेरे हाथ भी उस झलक की सुखद अनुभूति में थम गए।

दादी जी का दिल इतना विशाल था, कि वे सब के लिए सहज ही सदा उपलब्ध रहती थीं और सबके भावों को भी जान लेती थीं और सबकी आवश्यकताओं को भली-भांति पूर्ण करती थीं। मैंने देखा, उनके हृदय में सबके प्रति प्रेम, सबको आगे बढ़ाने का उत्साह सदा ही बना रहा।

दादी जी को हमेशा ये ध्यान रहता था कि सभी अपनी-अपनी विशेषताओं से आगे बढ़ें तथा बाबा के बेहद यज्ञ को सुचारू रूप से चलायें। बीच-बीच में स्व-उन्नति के प्रोग्राम का आयोजन करना, ये उनकी बहुत बड़ी खूबी थी। वे अपने उद्बोधन में हमेशा कहती थीं कि परमात्मा के इस भगीरथ कार्य को खुशी-खुशी से आगे बढ़ाना है।

मैंने दादी जी को एक कुशल प्रशासिका के रूप में देखा। दादी के प्रशासन करने का तरीका आज के परिवेश से बिल्कुल ही भिन्न था। सबको प्रेम से उनकी योग्यताओं के अनुरूप चलाना उनकी खूबियाँ थीं। दादी जी को हमेशा यह ख्याल रहता था कि बाबा को प्रत्यक्ष करना है। उसी संदर्भ में वे चाहती थीं कि बाबा के कार्य में लाखों लोग आयें और बाबा के अवतरण का संदेश लेकर जायें और परमात्मा के कार्य को समझें।

दादी जी की परख शक्ति गज़ब की थी। दादी ने, जब यज्ञ के विशाल प्रोजेक्ट ज्ञानसरोवर के निर्माण का कार्य आरंभ करना था तो दादी ने मुझे कहा कि आपको यहाँ की व्यवस्था को सम्भालना है। जबकि मुझे तो निर्माण के संबंध में कुछ जानकारी नहीं थी, कोई अनुभव नहीं था, ना ही ऐसी मुझमें कोई स्किल थी। दादी जी ने मुझपे भरोसा जताया और वह परमात्मा का प्रोजेक्ट समयबद्ध पूर्ण भी हुआ। दादीजी की दूरदर्शिता एवं पारदर्शिता इतनी थी कि वो चाहती थीं कि इस महायज्ञ में जो भी कुछ होता वो हर कोई जाने, समझे और समझपूर्वक अपना सहयोग दे। दादी जी एक-एक ऐसे विशाल प्रोजेक्ट को सर्व के सहयोग से पूर्ण करती थीं। कभी भी सेवा के बड़े से बड़े प्रोजेक्ट खेल खेल में पूर्ण हो जाते थे, किसी को विशेष कार्य के भारीपन का बोध ही नहीं होता था।

दादी जी किसी भी त्योहारों के आते ही उस त्योहार के आध्यात्मिक रहस्य को बतातीं भी और सबको इसका महत्व भी समझाती थीं। जैसे कि रक्षाबंधन का त्योहार आते ही सबको पवित्रता की राखी बांधना और सबको वरदान देकर उसका उमंग-उत्साह बढ़ाना, ये तो दादी की फितरत में था। मुझे दादी को बहुत करीब से देखने, जानने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ। दादी जी के हर कार्य में अलौकिकता नज़र आती थी। यज्ञ कारोबार की कैसी भी बातें हों, लेकिन दादी बड़े शांत और हल्के रहकर निवारण करती रहीं। आज जो हम इस संस्था के विशाल रूप को देख रहे हैं, ये दादी जी के योगदान और उनकी दूरदर्शिता का ही परिणाम है। आज विशेष रूप से उनकी दसवीं पुण्य स्मृति दिवस पर उनकी स्मृतियाँ जैसे कि रील की तरह मानस पटल पर आती जा रही हैं। उनके जीवन से सीखकर अपने जीवन को भी धन्य बनायें, यही सच्चे अर्थों में उनकी पुण्य तिथि को मनाना व उनके प्रति हमारी सच्ची स्नेहांजलि होगी।

जहाँ पड़े कदम, वहाँ रचा इतिहास

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

भारत पाकिस्तान के बँटवारे के समय जब हमारा सिन्ध से माउण्ट आबू आना हुआ तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं, किन्तु दादी को हमने सदा ही हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प या बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनाएगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली चलाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का मुख्य केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा

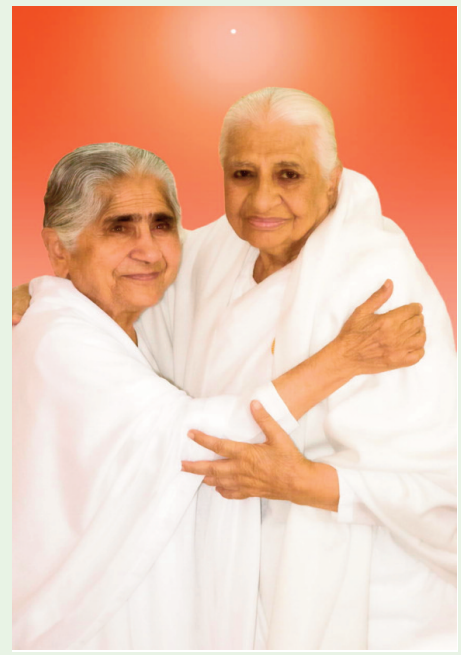

ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रुहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था। यह मेरा महान भाग्य है कि दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर ज़रा भी दु:ख, चिंता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं और सर्व का सहयोग लेने की बड़ी सुंदर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूंगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।

दादी का कहना, जीवन चला जाए पर खुशी नहीं

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

हमने दादी को शुरु से ही साकार बाबा के साथ यज्ञ के हर कार्य में हाथ बंटाते हुए देखा। साकार बाबा की तरह ही दादी ने भी इस यज्ञ को उसी रीति-रस्म से आगे बढ़ाया। जिस प्रकार कोई भाई बहन गलती करने के बाद हिम्मत करके यदि बाबा के पास चले जाते तो बाबा उनको बड़े प्यार से बिठाते थे और टोली खिलाते थे। उसी तरह दादी जी के पास भी जब कोई आता था तो दादी जी बड़े प्यार से उससे बात करती थीं। दादी जी कभी किसी की गलती याद नहीं दिलाती थीं। गलती करने वाले को स्वयं ही अपनी गलती की इतनी महसूसता होती थी कि वो स्वयं से ही प्रण करता था कि मैं कभी इस गलती को नहीं दोहराऊंगा। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई, तो दादी कहतीं कि कोई बात नहीं, आप छोटे हैं ना और वो बड़ी हैं, तो आज आप थोड़ी देर के लिए खुद को बाबा के साथ रखकर देखो कि आपको कैसा लगता है। दादी जी ऐसे प्यार से छोटी-छोटी बातें करके बहलाती थीं, लेकिन उस बड़ी बहन को कभी उलहना नहीं दी कि तुमने ऐसा क्यों कहा। उसे बहुत प्यार देकर उसके मन को ठीक कर देती थीं। दादी जी क्लास भी कराती थीं और सब कायदे कानून भी समझाती थीं। लेकिन व्यक्तिगत मिलन में सीधा ऐसे नहीं कहतीं थीं कि तुमने ऐसा किया। दादी कहती थीं कि बाबा ने कहा है कि जीवन भल चला जाए पर खुशी न जाए। हमारी दादी जी सबके दिल की प्यारी और अति न्यारी, सर्व के दिलों में प्यार की, रहम की और सहयोग की छाप लगाने वाली सर्वस्नेही थीं। दादी हम सभी ब्राह्मणों के दिलों में समाई हुई हैं। दादी देहातीत अवस्था को प्राप्त कर चुकी थीं, इसलिए उन्हें बीमार होते भी सदा शांत व हर्षित देखा। इसलिए उन्हें दु:ख का रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया, ये कमाल हम सभी महसूस करते थे। दादी सभी को शिक्षा देती थीं कि पेशेन्ट होते हुए पेशेन्स की स्थिति में रहना क्या होता है। दु:ख की लहर तो स्वप्न मात्र भी नहीं थी, क्योंकि ब्राह्मण जन्म से ही दादी ने पुरुषार्थ में कोई कमी नहीं की। दादी हमेशा कर्मातीत अवस्था की धुन लगाई हुई थीं। बाबा ने भी इसलिए कहा था कि ये मेरी एकदम सहयोगी, स्नेही और समान बच्ची है, उसकी दिल रखनी ही थी। वे सदा निर्विघ्न, स्वमानधारी, सम्मानधारी मूरत होने के कारण किसी भी विघ्न के वश नहीं हुईं। सदा विजयी रहीं। दादी जी के साथ बिताया हुआ हर एक क्षण मधुर स्मृतियों से भरा हुआ है। वे कोई बात बोलती थीं और थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वे साइलेंस में चली जाती थीं। जब दादी से कोई कहता कि दादी आपने ये काम करवाया तो दादी थोड़ी देर तक तो सुनती रहती थीं, उसके थोड़ी देर बाद अंगुली ऊपर इशारा करके कहती थीं कि ये काम बाबा ने कराया। करनकरावनहार बाबा है, मैं तो निमित्त हूँ। दादी जी सबकी विशेषताओं का वर्णन बहुत अच्छे तरीके से करती थीं। जब कोई भी पार्टी आती थी बाबा से मिलन मनाने तो वे उस पार्टी के लिए स्पेशल इंतज़ाम कराती थीं, उनके लिए पूछती थीं कि आज भंडारे में क्या बना है, उनके हिसाब से अलग-अलग बाबा के भोग बनवाती थीं। हमें भी उनका बहुत रिगार्ड है, हम उनके अंग-संग रहे। हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। दादी जी हमारे बीच में अपनी शिक्षाओं के माध्यम से आज भी उपस्थित हैं और सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही हैं।

दादी जी मानवता के धरातल पर ही रहीं...

दादी जी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली, निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा। आदर्श विद्यार्थी तथा अपने जीवन को सदा मानवता के साथ जोड़कर रखने वाली और आध्यात्मिकता को अपने जीवन में उतारकर जीने वाली दादी जी सबके दिल पर राज करते थे।

जब इन्सान महान बनता है तो कभी-कभी अपनी निजी मानवता को छोड़ देता है, परंतु दादी जी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर के इन्सानी जज़्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम देखते हैं तो इन्सानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी के इस बेहद निजी पहलू पर हमारी नज़र शायद न गई हो, लेकिन इस बात पर अगर हम गौर करें तो दिखता है कि कैसे दादी जी हरेक छोटे-बड़े, साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थीं। सर्दी हो या बारिश, हर आने वाले छोटे-बड़े व्यक्ति के गर्म कपड़े या बरसाती का ध्यान दादी जी रखती थीं। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाती थीं। यज्ञ में कोई बीमार हो या अस्पताल में कोई भी पेशेन्ट हो, दादी जी ने स्वयं मिलकर या किसी को भेजकर हमेशा उनका ख्याल रखा है। किसी पर भी उनके किसी निर्णय से अन्याय न हो इस बात का दादी जी ने सदा ध्यान रखा। दादी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई बाहर का श्रमिक सेवाधारी, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ती थी, ऐसे कोने में चुपचाप खड़े व्यक्ति पर भी दादी जी की नज़र पड़ती थी और खास उस व्यक्ति का ख्याल रखती थीं। मतलब कि दादी जी के इन्सानी जज़्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा है।

दादी जी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली, निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। किसी से भी कोई नई बात सीखने और समझने में उनको कभी भारी नहीं लगता था। उम्र से इतनी बड़ी होने के बावजूद अभी-अभी आई हुई कुमारियों को सखीपन का अनुभव वह बड़ी ही सहजता से करा देती थीं। मुरली को पढ़कर ऐसा आत्मसात कर लेती थीं कि जब वे सुनाती थीं तो सुनने वालों को भी वह स्वत: आत्मसात हो जाती थी। 70 वर्ष से नियमित ज्ञानयोग की पढ़ाई करते रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनके उत्साह व लगन को किसी नये विद्यार्थी की तरह ही तरोताज़ा देखा गया।

और हाँ, किसी की नज़र तीक्ष्ण हो तो उनके अंदर छिपे हुए इनोसेन्ट बच्चे को उसने अवश्य देखा होगा। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना उनकी आकर्षक छवि में चार चाँद लगाता था। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र आसपास की हवाओं पर इतनी रुहानी खुशबू फैला देती थी कि दूर कोने में बैठा व्यक्ति भी महसूस करता कि वह कहीं आसपास ही हैं।

हरेक के अंदर छिपे हुए गुणों को परखकर उनके उस गुण या कला को बाबा की सेवाओं में लगाने की कला को केवल उन्हीं से सीखा जा सकता है। वे न केवल उस व्यक्ति के गुण और कला की परख करती थीं बल्कि कद्र भी करती थीं और समय पर सबके सामने उसका वर्णन भी करती थीं। जीवन के अंतिम दिनों में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वह मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं, लेकिन उनकी नज़रों में हमें पहचानने के चिन्ह अवश्य दिखाई देते थे। उस समय भी उनकी एक दृष्टि को पाने के लिए हज़ारों लोग शान्ति और धैर्यता से लम्बी कतार में खड़े रहते थे। दादी जी ने अंतिम श्वास तक अपना हर पल बाबा की सेवा में बिताया। आज भी उनकी ही सेवाओं का मीठा फल हम सब खा रहे हैं। ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। उनके जीवन और जज़्बे को हमारा शत् शत् प्रणाम और श्रद्धांजली।

रूद्रपुर-उत्तराखण्ड। माननीय मुख्यमंत्री तिवेन्द्र सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सूर्यमुखी।

बुटवल-नेपाल। कुमारों के लिए 'यूथ रिट्रीट फॉर पॉज़ीटिव लाइफ स्टाइल' विषयक त्रिदिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. हेमन्त,माउण्ट आबू तथा अन्य।

न्युयॉर्क। संस्कृति युवा संस्था,जयपुर हेडक्वार्टर्ड एन.जी.ओ. द्वारा आयोजित 'भारत गौरव अवॉर्ड' सम्मान कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ नॉर्थ अमेरिका की डायरेक्टर ब्र.कु. मोहिनी को उनके मानवता के प्रति उत्कृष्ट कार्यों के लिए ये अवॉर्ड प्रदान किये जाने पर उसे प्राप्त करते हुए ब्र.कु. भूमिका।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् बी.वी. राम गोपाल,ई.डी., आई.ओ.सी.एल. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण तथा ब्र.कु. हर्षिता।

पठानकोट-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस पर आयोजित रैली को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए नगर के नवनियुक्त विधायक अमित विज, व्यापार मंडल के एल.आर. सोढ़ी, ब्र.कु. सत्या बहन तथा ब्र.कु. प्रताप।

नोएडा-उ.प्र.। सद्भावना भवन में 'क्रियेटिंग योर मिराकल' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य वक्ता विश्व प्रख्यात जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी। साथ हैं ब्र.कु. शील तथा शहर के गणमान्य अतिथियों के साथ ब्र.कु. बहनें।

ज़िम्बाव्वे। 'पॉवर ऑफ लव' विषय पर टॉक शो के पश्चात् समूह चित्र में वहाँ के भाई बहनों के साथ ब्र.कु. साधना,किंग्सवे कैम्प दिल्ली।

कायमगंज-फर्रूखाबाद(उ.प्र.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् बैंक मैनेजर अरुण कुमार को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथलेश।

भरतपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गणमान्य लोगों सहित विशाल जनसमूह को राजयोग मेडिटेशन कराते हुए ब्र.कु. बबिता।

गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी, दादी जी से आशीर्वाद लेते हुए।

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी का शाल ओढ़ाकर अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि।

दक्षिण आफ्रिका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

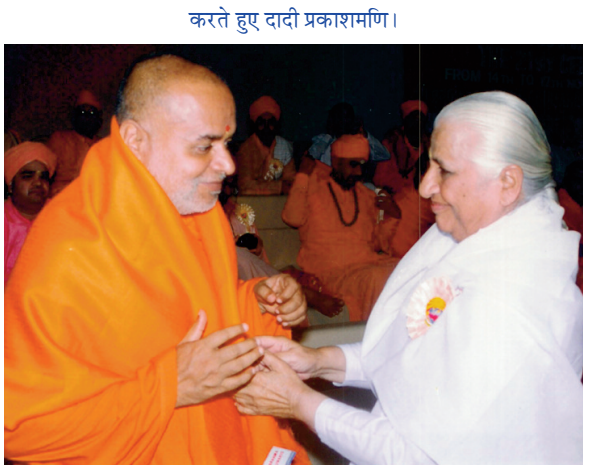

स्वामी गंगाधर को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए दादी प्रकाशमणि।

दादी जी चले विश्व अभियान की ओर...

योग की पराकाष्ठा से ओत प्रोत दादी प्रकाशमणि बहुत दूर से ही सबके दिलों को छू जाते थे। महान परिवर्तन के कार्य में परमात्मा ने इसीलिए ऐसी आत्मा को विश्व ग्लोब के सबके ऊपरी हिस्से पर रखा। हमारा अनुभव कहता है, दूरांदेशी प्रवृत्ति की दादी मिसाल थीं। उनके ज़हन में विश्व की आत्माओं के प्रति जो भाव था, वो उनकी सेवाओं में दिखता था। पूरे विश्व को अपना परिवार मानने वाली दादी ने हर स्थान पर उसी भावना के साथ सेवा की। उसका ज्वलंत प्रमाण आज हमारे सामने है, कि आज लाखों परिवार ज्ञान योग की शिक्षा को अपने जीवन में धारण करके विश्व परिवर्तन के कार्य में संलग्न हैं।

जीवन में आध्यात्मिकता को धारण करने के बाद दादी जी विश्व के विभिन्न स्थानों पर उसकी सुगंध बिखेरने हेतु चल पड़े। उन स्थानों की कुछ झलकियाँ व उपलब्धियाँ संक्षिप्त में आपके सामने हम रख रहे हैं।

द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में लिया भाग

सन् 1954 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। दादी ने थाईलैन्ड, इन्डोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में छः माह तक भ्रमण करके हज़ारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य से अवगत कराया तथा उन्हें भी इस महान परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनाया।

विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं में अग्रिम भूमिका

दादी की दिव्य बुद्धि, वक्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। इनके सद्प्रयास से दिल्ली, मुम्बई, अमृतसर, कानपुर, कोलकाता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। पांच वर्ष तक मुम्बई राजयोग केन्द्र की निदेशिका के रूप में दादी ने सैकड़ों कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किये, जिससे लाखों आत्माओं को आध्यात्मिक रूप से लाभ मिला।

1964 में इन्हें महाराष्ट्र ज़ोन की संचालिका और उसके बाद 1968 तक महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक ज़ोन की प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर दादी के हाथों में

1969 में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान की पूर्व संध्या पर दादीजी की अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए, अपना हाथ दादीजी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्व-शक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके सान्धिय में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की

दादी जी के नेतृत्व में समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के रूप में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की व युनिसेफ़ से जोड़ा।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शान्ति दूत सम्मान' से भी नवाज़ा। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी पुरस्कार प्रदान किये। इसके अलावा, दादी जी को महामण्डलेश्वरों, समाजिक संस्थानों ने विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान चिन्ह भेंट करते हुए उनकी सेवाओं की स्तुति की।

'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से नवाज़ा

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर,1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ एम.चेन्ना रेड्डी ने 'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें 'अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार - 1994' भेंट किया ।

सोलह विभिन्न वर्गों का गठन

दूरदृष्टा दादी जी ने राजयोग शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सलाह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद, युवा, मेडिकल, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बंधुत्व का बोध जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं।

'विश्व धर्म संसद' की मनोनीत अध्यक्षा

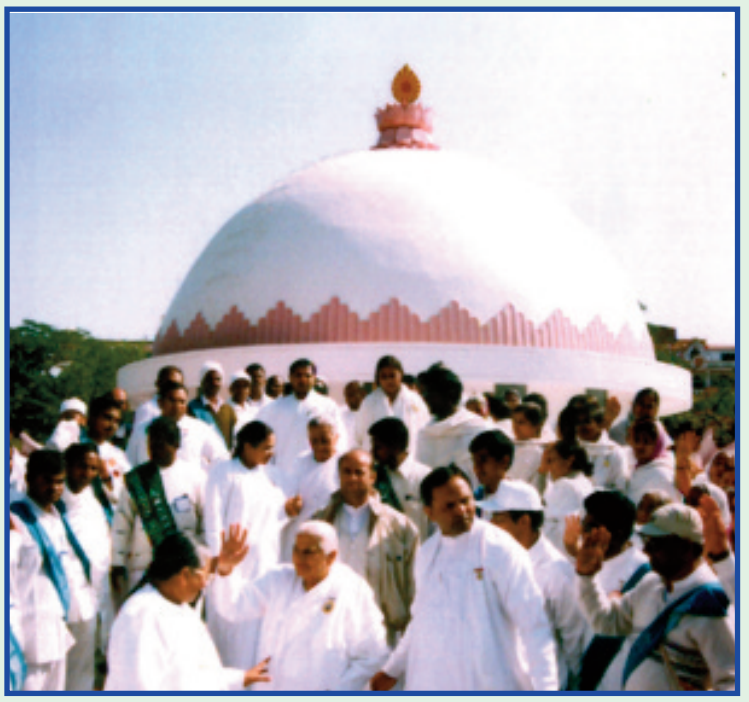

शिकागो में 'विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयीं, उस समय वाशिंगटन डी.सी. में स्टेट कैपिटल बिल्डिंग के सामने मेयर ने दादी जी के कर कमलों से वृक्षारोपण कर 'ओम-शान्ति ट्री' नामांकित किया, साथ ही प्रतिवर्ष 10 जून को 'प्रकाशमणि दिवस' मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् कायम है।

विशेष आवॉर्ड से सम्मानित

यूनेस्को ने दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष आवॉर्ड से सम्मानित किया। शान्ति एवं सद्भाव के संचार के लिए दादी जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय धर्मसम्मेलन का आयोजन शान्तिवन में विभिन्न तीर्थ स्थलों से निकाली गई यात्राओं के समापन पर किया गया। इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी सर्व धर्म सम्मेलन, नारी सम्मेलन एवं युवा यात्राओं का आयोजन उन्हीं की प्रेरणा का परिचायक था। ऐसी आभामयी दादी को शत्-शत् नमन।

प्यार की प्रतिमूर्ति दादी प्रकाशमणि

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ,माउण्ट आबू

उनके प्रशासन की चहुँ ओर प्रशंसा होती थी..., जब वे चलती थीं तो हज़ारों के होठों पर मुस्कान झलकने लगती थी..., जब वे मुरली सुनाती थीं तो सबके मन मयूर नृत्य करने लगते थे..., जब वे फैसले देती थीं तो उनमें विश्व कल्याण की भावना दृष्टिगोचर होती थी और जब वे योग में बैठती थीं तो प्रभु-प्रेम की तरंगें चहुँ ओर अनुभव होती थीं... जिनका अभाव आज सभी को अत्यधिक महसूस होता है। सब बहुत कहते हैं कि काश आज वे होतीं। जिनकी पुण्य तिथि 25 अगस्त सम्मुख है। प्रस्तुत हैं उनके जीवन की कुछ महानताएँ...

उनकी ममतामयी बातें

बात 40 वर्ष से भी ज़्यादा पूर्व की है। माउण्ट आबू, हमारे मुख्यालय में 50 पत्रकार प्रथम बार आये। दादी जी ने शाम के समय सभी का स्वागत किया और इतनी प्यार भरी वाणी बोली कि अगले दिन 20 अखबारों में छपा...''प्यार की प्रतिमूर्ति दादी प्रकाशमणि''।

वे सबको अपनेपन की भासना देती थीं। उनकी दृष्टि ही ऐसी थी कि ये सब हमारा परिवार है। इसमें सब खुश रहें। संगठन में अनेक लोग गलती भी करते थे परन्तु उनका शिक्षा देने का तरीका अति स्नेह-पूर्ण था। हम भी तब छोटे थे, हम भी कई गलती करते थे, परन्तु दादी ने कभी डाँटा नहीं, बल्कि सिखाने की दृष्टि से प्रेरक बोल बोले।

इस बात के लिए वे बहुचर्चित थीं कि वे प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। उनके चेहरे पर सदा प्रेम व खुशी की झलक देखी जा सकती थी। उनकी प्रसन्न मुद्रा के कारण कोई भी उनसे सहज ही मिल लेता था। यद्यपि वे ब्रह्माकुमारीज़ की चीफ थीं, परन्तु उनके प्रशासन में डर नहीं प्रेम था।

वे ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित थीं

ब्रह्माबाबा उन्हें ज्ञान की बुलबुल कहते थे। वे सफल वक्ता व श्रेष्ठ चिंतक थीं। उनके चहुँ ओर अनेकों ने प्रकाश की झलक देखी थी। उनकी वाणी बड़ी ही प्रभावशाली थी। सब गर्व करते थे कि हमारी चीफ श्रेष्ठ स्पीकर हैं।

ज्ञान सुनाना तो सभी को आता है, परन्तु ज्ञान-स्वरूप जीवन बनाना - वे इस कला में पारंगत थीं। वे कहती थीं कि हमारा जीवन ज्ञान दर्पण है, इसमें सभी को अपने चरित्र की तस्वीर दिखनी चाहिए। हमने सदा ही उन्हें ज्ञान की मस्ती में मग्न देखा। यही कारण था उनकी वाणी में प्रभाव का। जब वे ईश्वरीय महावाक्य सुनाती थीं तो हॉल में परम आनंद का माहौल बन जाता था और इतने सरल ढंग से महावाक्य सुनाती थीं कि वे सहज ही हृदयंगम हो जाते थे।

सागर जैसा दिल था उनका

वे तब से संस्था की मुख्य प्रशासिका थीं, जब यज्ञ साधारण था अथवा धन-संपन्न नहीं था, परन्तु इस महान यज्ञ में वे अति उदारता से ब्रह्मा भोजन कराती थीं, क्योंकि ये हमारा विषय था। हम देखते थे कि खिलाने पिलाने

में राजाओं जैसा दिल। प्रति वर्ष सभी को पूरे वर्ष के वस्त्र मिलते थे, उसमें सबको खुश रखती थीं। लिस्ट लेती थीं कि किसको क्या चाहिए, ताकि उनके परिवार में किसी को कोई तंगी न हो।

वे ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी टीचर्स को भी कहती थीं कि बड़ा दिल रखो। बड़ा दिल रखोगे तो भण्डारे भरपूर रहेंगे। अपने साथियों को खुश रखो, उनकी दुवाओं से सेवाएँ बढ़ेंगी। जहाँ भी कुछ खर्च करने की बात आती, तो वे इकोनॉमी तो अवश्य सिखती थीं परन्तु दिल खुला रखती थीं।

हमने देखा इस धर पर सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को

इन आँखों से दादी प्रकाशमणि के रूप में सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को देखने का सौभाग्य मिला। उनकी दृष्टि निर्मल, वाणी सुखद और वृत्ति अति कल्याणकारी थी। उनके मुख की चमक उनकी पवित्रता की झलक थी। वे निष्पाप थीं और कर्मठ थीं।

ऐसी पवित्र आत्माएँ इस वसुन्धरा पर वरदान होती हैं। उनका पुनर्जन्म भी ऐसे महान श्रीमानों के घर हुआ जो पानी भी प्रभु-अर्पण करके पीते हैं, जिनका प्रांगण सात्विक है और स्वयं भाग्य विधाता ने उन्हें महान कर्त्तव्यों के लिए ही वहाँ भेजा है। हमने देखा कि उनकी पवित्रता के समक्ष ही अनेक महामण्डलेश्वर महात्माओं के शीश भी झुकते थे।

बुद्धि तैयार होती है उनकी महानताओं को अपनाने के लिए

वे महान थीं। महान मनुष्य में जो महान धारणाएँ होती हैं, उन्हें अपनाने को मन करता है। वे पूर्णतया संतुष्ट थीं, निरहंकारी थीं, हर्षित चित्त थीं, किसी का भी अवगुण या किया गया बुरा व्यवहार उनके चित्त पर नहीं रहता था। उनके मन में किसी के लिए भी बदले का भाव नहीं देखा गया। हमने देखा उन्हें सभी को क्षमा करते। वे नम्रता व मृदुता की प्रतिमूर्ति थीं, क्रोध व आवेश से परे थीं। उनका व्यवहार योग्य था। सभी छोटी-बड़ी टीचर बहनें उनसे मिलकर महसूस करती थीं कि वे हमारी हैं और हमें कभी भी ज़रूरत पड़े तो दादी जी उनके साथ रहेंगी। उनकी छत्रछाया में वे अपने को सुरक्षित अनुभव करती थीं।

वे दयावान थीं, किसी के आँसू नहीं देख सकती थीं। स्वयं परम-शिक्षक परम-आत्मा ने भी उनकी महिमा करते हुए कहा था कि वे 'मैं' पन से मुक्त, सदा निमित्त, निर्मान भाव में रहने वाली निर्मल चित्त थीं। वे ऐसी प्रशासक थीं जो सभी का बहुत ध्यान रखती थीं। वे सरल स्वभाव सम्पन्न सहज योगी थीं। अपने सम्पूर्ण संगठन की प्रसन्नता का बहुत ख्याल करती थीं। आज सभी उनके इस आचरण को स्मरण कर उनका अभाव महसूस करते हैं।

ये महानताएँ मनुष्य को महा मानव बनाती हैं। हम भी उन्हें जीवन में अपनायें। यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली है। वे स्वयं तो आगे बढ़ती ही थीं, परन्तु दूसरों को आगे बढ़ाने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती थीं। ऐसी थीं वे महान आत्मा। आइये उनके स्मृति दिवस पर उन जैसे राजाई संस्कार बनाने का संकल्प करें। जब उनके साथ बिताये गये दिन याद आते हैं तो सिर श्रद्धा से झुक जाता है। उन्हें याद करने का अर्थ है, उन जैसा समर्पण भाव स्वयं में अपनायें। जितना उनमें प्रभु-प्रेम था, जितना उनमें यज्ञ-प्रेम व मुरली-प्रेम था, वैसा ही हम भी रखें। हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हुए उन्हें अपना प्रेम व सम्मान अर्पित करते हैं।

हरिपुरधार-हि.प्र.। केन्द्रीय जनजातीय मंत्री जुएल ओराम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा तथा ब्र.कु. दीपशिखा।

गुमला-झारखण्ड। नगर भवन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राजयोग के अभ्यास के पश्चात् समूह चित्र में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश अवनी रंजन कुमार सिन्हा, फैमिली जज अरिवल कुमार एवं अन्य न्यायाधीशों के साथ जिला बीससूत्री सदस्य, प्रदेश सदस्य भाजपा शकुंतला उराँव, ब्र.कु. शान्ति तथा ब्र.कु. नीलम।

एस.बी.एस. नगर-पंजाब। विधानसभा के सबसे युवा विधायक अंगद सिंह को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट कर मीडिया द्वारा हो रही सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. राम तथा ब्र.कु. पोखर।

बड़ौत-उ.प्र.। प्रसिद्ध भागवत कथाकार अतुल महाराज जी के सेवाकेन्द्र में आने पर उनके साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मोहिनी तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

सुन्दर नगर-हि.प्र.। डॉ. अविनाश पँवर को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. नवीना।

फतेहगढ़-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दयानन्द मिश्र,आई.पी.एस., मिथलेश अग्रवाल,पूर्व चेयरमैन,नगरपालिका एवं वरिष्ठ भाजपा नेता, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

बरेली-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए विधायक डॉ. अरुण कुमार। मंचासीन हैं ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. नीता, ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. रजनी व अन्य।

चैल चौक-हि.प्र.। पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते हुए सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल स्याँज के प्रधानाचार्य तथा ब्र.कु. प्रियंका। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश तथा अन्य।

सुखमय दुनिया की अग्रदूत दादी प्रकाशमणि

विदुषी, सशक्त नारी, परमात्म प्यारी, नारी शक्ति का अनुपम उदाहरण दादीजी की आभा तथा उसका फैलाव आज पूरा विश्व देख रहा है। आज सम्पूर्ण मानव समाज इस बात को दिल खोल के कहता है कि इस करिश्माई व्यक्तित्व से हमने अपनी मंसा को पूरी तरह से बदला है, और हो भी क्यों नहीं, क्योंकि हमारी दादी थीं ही ऐसी, जिन्होंने आध्यात्मिकता की मशाल जन-जन के हृदय में उन अनुभूतियों से जगाया, जिनसे वे खुद ओत-प्रोत थीं। आज उनकी छाप पाँचों महाद्वीपों में उनके चरित्र के गुणगान के रूप में चित्रित हैं। सबके मध्य दादी जी अपने कर्त्तव्यों के माध्यम से आज भी जीवित हैं। जो कि आज परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं, जिन्होंने दादी के साथ रहकर कार्य किया, उनका उनके साथ का अनुभव उन्हीं के शब्दों में...

दादी जी से सभी सदा संतुष्ट रहे

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण किसी भी योग्यता में पारंगत होने के लिए मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। ओम शांति भवन, ज्ञान सरोवर, शांतिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबंधन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं। दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, जब कोई गलती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुलाकर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा संतुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और संतुष्ट रहने चाहिए। किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी। - **ब्र.कु. मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधिका,माउण्ट आबू**

दादी में समानता का भाव सदा रहा

सत्यता व पवित्रता की शक्ति होने के कारण दादी में निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। निर्भयता से निर्णय लेती थीं, किसी भी बात का उन्हें भय नहीं होता था। वे सभी को समान दृष्टि से देखती थीं, उनमें पक्षपात की भावना नहीं थी। जो सत्य बात होती थी उसे वो कह देती थीं।

जो भी उनके सामने आता था वो उनके निर्मल व निश्छल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। दादीजी हमें भी अपनी सखी की तरह समझती और व्यवहार में आती थीं। मैं दादी बृजेन्द्रा के साथ रहती थी। उनकी तबियत ठीक न होने के कारण मुझे ही सभी कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता था। तो कभी किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए मैं बृजेन्द्रा दादी से पूछती थी कि दादी क्या करना चाहिए? तो दादी कहती थी कि बड़ी दादी से पूछो। और जब मैं बड़ी दादी को फोन करती थी तो दादी कहती थीं कि संतोष, तुम मेरे को फोन कर रही हो, तुम्हारे पास इतनी बड़ी दादी बैठी है तो उनसे ही पूछो। इस तरह दादियाँ एक-दूसरे को बहुत सम्मान व रिगार्ड देती थीं। दादी छोटों को भी प्यार व रिगार्ड देकर आप समान बना लेती थीं। बड़ों के साथ बड़ा और छोटे बच्चों के साथ दादी भी छोटे बच्चे समान उनसे खेलने लग जाती थीं। -**ब्र.कु. संतोष,अध्यक्षा, समाज सेवा प्रभाग**

उमंग उत्साह से आगे बढ़ाती दादी

जब बाबा ने यज्ञ की स्थापना के समय ओम निवास बनवाया, उसमें 80 बच्चों के लिए लौकिक व अलौकिक पालना की व्यवस्था करवाई। मैं उस समय सात वर्ष की थी। बाबा ने कहा कि इन पवित्र पौधों को सम्भालने के निमित्त केवल पवित्र कन्यायें होंगी। तो पाँच कन्याओं को दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दादी शान्तामणि, मिट्ठू दादी और एक बहन को निमित्त बनाया। बड़ी दादी ने चौदह वर्ष की आयु में ही माँ की तरह, शिक्षिका की तरह बेहद स्नेह से पालना की। सदा बाबा के डायरेक्शन अनुसार ही बड़ी दादी हर कार्य और सेवा इतने दिल से करती थी कि सबको प्रेरणा मिलती थी उनके जैसा बनने की। दादी सदा ही अचानक फोन करती थी, कमलमणि, दादी तुम्हारे पास अभी आ रही है, और बहुत हक से, प्यार से दादी यहाँ आते थे और नई नई प्रेरणाएं और अपनी शुभभावनाएं, दिल की दुआएं देकर जाते थे। दादी सदा ही हँसाते और बहलाते थे। उमंग-उत्साह बढ़ाकर दादी अपने से भी आगे बढ़ने के लिए हमको प्रेरित करतीं। बचपन से ही दादी की पालना, दिल का स्नेह, वरदानी बोल और दृष्टि हम कभी नहीं भूल सकते। - **दादी कमलमणि, दिल्ली**

परमात्म संदेश जन-जन को मिले

हम सभी दिल व जान से दादी जी को याद करते हैं। रात दिन उनकी समीपता की, सहयोग की, सिर पर हाथ की अनुभूति करते हैं, क्योंकि हमारी दादी सम्पूर्ण फरिश्ता बनकर ही गए हैं, जिसे हम कर्मातीत स्थिति भी कहते हैं। आज भी दादी हृदयमोहिनी के तन द्वारा आकर के अपना स्नेह, अपना प्यार समय प्रति समय दे रहे हैं। जो बाबा के बच्चे दादी जी के साथ रात-दिन सेवा में साथ रहे, सहयोगी रहे, उनसे पूरी तरह से अनुभूति किये, वे दादी जी को कभी भी भूल नहीं सकते। मैं हर रोज़ अमृतवेला एवं नुमाशाम पर भी बाबा व मम्मा के साथ दादी जी का फरिश्ता स्वरूप में अनुभव करता हूँ। दादी जी जो संकल्प करती थीं वो कार्य संपन्न हो जाता था। हम सभी ने देखा कि दादीजी ने संकल्प किया कि लाखों की सभा होनी चाहिए और वो सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। विश्व के परिवर्तन के महान कार्य में दादी जी आज भी हमारे साथ हैं। दादी जी का संकल्प था विज्ञानियों को आगे बढ़ाना, स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना, उसमें भी दादी जी हम सबके साथ हैं। दादी हम सबके साथ हैं, साथ रहेंगी और साथ ही हम सब वापिस अपने सतयुगी दुनिया में जाएंगे। हर गांव एवं शहर के जन-जन तक परमात्म-संदेश पहुँचे इसलिए दादीजी ने ईश्वरीय प्रेरणा से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका का प्रकाशन आरंभ कराया।

- **ब्र.कु. करुणा,अध्यक्ष,मीडिया विंग**

दादी जी का जीवन एक खुली किताब

दादी जी एक ऐसी महान विभूति थीं जिनका जीवन ही एक खुली किताब की तरह था, जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग, उत्साह और साहस का स्वीच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी जी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादी जी सादगी और स्वच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। ड्रामा अनुसार बाबा ने मुझे सेवा के लिए पटना भेजा। उस समय बाबा सेवा के हिसाब से ''सिन्धी गीता'' लिखना चाहते थे, जिसके लिए बाबा का बुलावा हुआ और दादी जी मधुबन गयीं। मुझे पटना के बहुत से भाई बहनों द्वारा दादी जी के जीवन की अद्भुत शक्ति, गुण और विशेषताओं के बारे में सुनने को मिला। पटना में महासम्मेलन का आयोजन किया गया था, तब दादी जी के और समीप आने का सौभाग्य मिला। दादी से बहुत अपनेपन की महसूसता हुई। दादीजी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

-**ब्र.कु. राज,क्षेत्रीय निदेशिका,काठमाण्डू**

दादी के जीवन में समय का महत्व सदा बना रहा

इस यज्ञ के संस्थापक ब्रह्मा-बाबा द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशासक के रूप में दादी प्रकाश-मणि को ही चुना गया तथा उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ का प्रमुख बना दिया गया। दादी जी की प्रशासनिक कला यज्ञ की पहली प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा के समान ही प्रभावशाली था। ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त होने से पहले दादी जी के हाथों में हाथ देकर, दृष्टि देते हुए अपनी सभी सूक्ष्म शक्तियाँ दिव्य रीति से उन्हें सौंप दीं। दादी जी एक कुशल प्रशासिका, महान आध्यात्मिक नेता, प्रेम से सबका देखभाल करने वाली माँ और बहन, एक ऐसी स्ट्रीक्ट टीचर जो ज्ञान की गहराइयों में नियमित, सच्चा योगी, एक बहुत ही प्यारी आध्यात्मिक दोस्त थीं। संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों का समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी एकता के सूत्र में बांध देती थीं। पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादी जी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय व शक्ति व्यर्थ न जाये क्योंकि इन शक्तियों के द्वारा ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादीजी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास तथा उसके संगठित प्रयोग से असंभव को भी संभव करने पर बल देती थीं। वे समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं। - **राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़**

दादी ने किसी की बात को चित्त पर नहीं रखा

दादीजी का दूसरों की गलतियों को क्षमा करने का स्वभाव दिल को छू जाता था। दादीजी कहती थीं कि बाबा, कौड़ी से हीरा, पतित से पावन व तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आये हैं। हर आत्मा जो ईश्वरीय ज्ञान-योग का अभ्यास करती है, पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है। उन्होंने सदा सभी पर रहम किया और दिल से गलतियों को क्षमा कर दूसरों को भी बीती बातों को याद न करने की शिक्षा दी। अपने हृदय को स्वच्छ, निर्मल, शक्तिशाली बनाकर फिर से पुरुषार्थ में लग जाने की प्रेरणा देती थीं। दादीजी का स्लोगन था, क्षमा करो और भूल जाओ। सभी को सम्मान देकर वे स्वयं माननीय बन गईं। उनका व्यक्तित्व दिव्यता व अलौकिकता से सम्पन्न था। - **ब्र.कु. आशा,निदेशिका,ओ.आर.सी.,गुरूग्राम**

संकल्प की दृढ़ता से असंभव भी संभव हो जाता

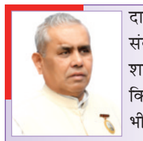

दादी जी के संकल्प में इतनी शक्ति होती थी कि असंभव कार्य भी संभव हो जाता था। एक बार जब दादी बैंगलुरू आईं तो उन्होंने कहा कि विधानसभा के बैंक्वेट हॉल में हमारा एक कार्यक्रम होना चाहिए। वहाँ एक सम्मेलन का प्रबंध करो। उन दिनों वह हॉल किसी भी गैर सरकारी संस्था को नहीं दिया जाता था तो हमने दादी जी से कहा कि वे प्राइवेट संस्थाओं को वह हॉल नहीं देते। दादी जी ने कहा कि आप हिम्मत करो, प्रयत्न करो, बाबा बैठा है। मुख्यमंत्री से मिलो, संबंधित अधिकारियों, सचिवों से मिलो, काम हो जायेगा। बच्चों का एक कदम और बाबा के हज़ार कदम। ऐसे कहकर हम सब भाई-बहनों में उन्होंने उमंग भरा और हम सबने मिलकर ऐसा ही किया। मुख्यमंत्री और संबंधित अधिकारियों से मिलकर वह हॉल ले लिया और बहुत बड़े रूप में प्रोग्राम वहाँ किया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा। उन दिनों ईश्वरीय इतिहास में यह एक विशेष प्रसंग था, यादगार घटना थी। उस सम्मेलन में केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के अनेक मंत्री तथा लोगों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय आदरणीय दादी जी को जाता है।

- **ब्र.कु. मृत्युंजय,उपाध्यक्ष,शिक्षा प्रभाग**

दादी से सभी को अपनेपन की होती महसूसता

ओम निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। बाबा अपनी ज़िम्मेवारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। कारोबार कैसे चलाना है, किस प्रकार बातचीत करना है, किस प्रकार सम्भालना है, वो सब कला दादी में बाबा से आ गईं। बाबा समान ही दादी के अंदर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी है। कोई भी सेवा हो, निमंत्रण आये, बाबा दादी को ही भेजते थे। पहले-पहले जापान से जब निमंत्रण आया, उसमें दादीजी का पहला पार्ट रहा। बाबा समान सबकी पालना, सबके ऊपर ध्यान देना तथा मधुबन वालों के लिए ठीक प्रबंध करना, यह सब दादी खुद करती थीं। रात्रि में पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ हैं ना। जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, वैसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो मांगना नहीं पड़ता था। जैसे बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबंध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए दादी ने बच्चों को ऐसा प्रबंध दिया कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आदि याद नहीं आये।

दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं, लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था। - **राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़**

प्रशासन में मानवीय सद्भावना का सदा रखा ख्याल

दादीजी दैवी परिवार के एक-एक सदस्य को बहुत ही महत्वपूर्ण और खास समझती थीं। दादी की नज़रों में सभी एक समान महत्व रखते थे, इसलिए उन्होंने कभी किसी को अलग से कोई खास टोली या गिफ्ट नहीं दिया। उन्होंने कभी किसी के अवगुण नहीं देखे, बल्कि सभी की विशेषताओं की सराहना की। जब भी मधुबन में कोई ग्रुप आता था तो दादीजी सभी के रहने की व्यवस्था तथा उनकी संतुष्टता का पूरा ध्यान रखती थीं। उन्होंने दैवी परिवार का मुखिया होने का रोल बखूबी निभाया। इतने विशाल आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अपने अधिकारों का मानवीय सद्भावना के साथ इस्तेमाल करती थीं। वह हमेशा याद कराती थीं कि यह कार्य बाबा का है और वो करा रहा है। उन्होंने बाबा पर दृढ़ निश्चय एवं समर्पण होकर सभी परिस्थितियों को पार किया। दादी ने शांतिदूत के रूप में कई देशों की यात्राएं की और वहाँ के प्रशासकों से मिलकर उन्हें शांति संदेश दिया। दादी से मिलकर सभी को पवित्र प्रेम की भासना आती थी। - **राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन,अध्यक्ष राजनैतिक सेवा प्रभाग**

दादी की निर्णय शक्ति प्रबल थी

दादी जी हर पहलू को सकारात्मक दृष्टि से देखतीं और नये विचारों को खुलकर अपनाती थीं। किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर उसको जांचती थी कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। इस प्रकार सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को प्रेरणा मिलती थी। वे केवल एक अच्छी प्रशासिका ही नहीं थीं, बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज़ को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। दादी जी को न केवल ब्राह्मण परिवार, बल्कि विश्व की सर्व आत्माओं से बहुत प्यार था। वे सहज भाव से पाण्डव भवन के बरामदे में बैठ जाती थीं और सभी के छोटे-से-छोटे सवालों का भी जवाब देती थीं। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी जी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादी जी में लव एवं लॉ का सुंदर बैलेन्स था। दादीजी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म-शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादीजी में निर्णय शक्ति बहुत प्रखर थी, वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, तुरंत उसे मूर्त रूप देती थीं। । - **ब्र.कु. डॉ. निर्मला, निदेशिका,ज्ञानसरोवर**

माउण्ट आबू। काशी पंचगंगा घाट से आये श्रीमठ सम्प्रदाचार्य जगदगुरू रामानंदाचार्य जी को रघुनाथ मंदिर माउण्ट आबू में मिलकर उनके साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. शशिकांत।

गुमला-लातेहार। सेवाकेन्द्र में आने पर डी.एफ.ओ. विजय शंकर दूबे को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. शांति। साथ हैं वकील राजमणी साहू।

सैफयी-करहल(उ.प्र.)। तम्बाकू निषेध दिवस पर हॉस्पिटल,मेडिकल युनिवर्सिटी में कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं उप कुलपति डॉ. ब्रिगेडियर टी. प्रभाकरन, एच.ओ.डी. डॉ. आदेश, एम.एस. डॉ. भूषण, ब्र.कु. निधि तथा अन्य।

स्वयं को 'मैं आत्मा हूँ' के भाव में स्थित करने से ही सफलता

- गतांक से आगे...

बारहवें अध्याय के पहले श्लोक से लेकर आठवें श्लोक तक निराकार या साकार की भक्ति के बारे में बतलाया गया है।

जैसे कई लोग पूछते हैं कि निराकार की भक्ति करें या साकार की भक्ति करें। अर्जुन का भी यही सवाल था कि भगवान, मैं आपको निराकार रूप में याद करूं या साकार रूप में याद करूं? भक्ति का अर्थ एवं निराकार की भक्ति का अर्थ, निराकार की भक्ति में विघ्न कौन से आते हैं?

नौवें श्लोक से लेकर बारहवें श्लोक तक यथार्थ भक्ति का मार्ग स्पष्ट किया गया है।

तेरहवें श्लोक से लेकर बीसवें श्लोक तक भगवान के प्रियजन के लक्षण बताये गये हैं। बहुत छोटा सा यह अध्याय है लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है।

अर्जुन भगवान से प्रश्न पूछता है कि भगवान, आपमें अनन्य भक्ति से लगने वाले और अव्यक्त की उपासना में लगने वाले दोनों में श्रेष्ठ कौन है? आकार रूप में याद करूं या अव्यक्त रूप में याद करूं, दोनों में श्रेष्ठ क्या है? साकार स्वरूप की भक्ति श्रेष्ठ है या निराकार स्वरूप की भक्ति श्रेष्ठ है?

भगवान कहते हैं कि मुझमें मन लगा करके सदा योगयुक्त होकर परमश्रद्धा से जो मेरी उपासना करते हैं, वह मेरे मत में सबसे उत्तम योगी हैं। बड़ा रहस्य युक्त जवाब है भगवान का। भगवान, जिसको कहा ही गया है बुद्धिवानों की बुद्धि, तो इसीलिए भगवान जवाब देते हैं कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ उस स्वरूप से याद करो, परमश्रद्धा से मेरी उपासना करो, मेरे मत से वह सबसे उत्तम योगी है। जो लोग अपनी इंद्रियों को वश में करके, सबके प्रति समभाव रख करके, उस परम सत्य, अव्यक्त निराकार पर ध्यान एकाग्र करते हैं, वो सभी लोगों के कल्याण में संलग्न रहकर अन्ततः मुझे प्राप्त करते हैं। परंतु जो लोग मन को परमात्मा के अव्यक्त निराकार स्वरूप के प्रति आसक्त करते हैं, उनके लिए उनका देह अभिमान ही उनके पुरुषार्थ और उनकी प्रगति में विघ्न बनता है। निराकार को जब याद करने बैठो तो सबसे बड़ा विघ्न जो आता है वह देह अभिमान ही है। ध्यान करने बैठो तो क्या होता है? कभी घुटना दर्द कर रहा है और कभी पीठ दर्द कर रही है। तो ये जो देह के साथ का लगाव है, ये लगाव हमारे लिए सबसे बड़ा विघ्न बनता है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

इसीलिए स्वयं के मन को इस देह के अभिमान से भी ऊपर उठा लो। 'मैं आत्मा हूँ' स्वयं को इस भाव में स्थित करो। फिर ये देह अभिमान बाधा नहीं बनेगा, विघ्न नहीं बनेगा। पुरुषार्थ के मार्ग में सबसे बड़ा विघ्न यही बनता है। साकार की पूजा करने में तकलीफ नहीं होती है। श्रीकृष्ण की पूजा करने में तकलीफ नहीं होती है। क्योंकि वो मनोहारी स्वरूप को सामने देखते हैं। कभी-कभी उसमें जैसे खो जाते हैं। उस समय शरीर का भान विघ्न नहीं बनता है। लेकिन जैसे परमात्मा को, निराकार अव्यक्त स्वरूप को याद करने का प्रयत्न करते हैं तो उस दिव्य स्वरूप को मानस पटल पर टिकाए रखने में मेहनत लगती है। इसलिए वहाँ पर फिर देह अभिमान पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न बनता है।

भगवान कहते हैं, हे अर्जुन! तू अपने मन और बुद्धि को मुझमें एकाग्र कर। अगर तू मन को मुझमें एकाग्र करने में समर्थ नहीं है तो योग का अभ्यास करो। बार-बार अभ्यास करो। यदि तुम योग का अभ्यास भी न कर सको तो सिर्फ मेरे प्रति ही यज्ञ कर्म करो। आत्मा का शुद्धिकरण करना है, यही यज्ञ है। यदि तू यज्ञ करने में भी असमर्थ है तो मन, बुद्धि और इंद्रियों को वश में करके सम्पूर्ण कर्मों के फल का त्याग कर और आत्म स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो। - क्रमशः

भादरा-राज.। लॉर्ड कृष्णा इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में स्कूल के चेयरमेन विजय चौबे तथा सुनिता चौबे द्वारा सम्मानित होते हुए ब्र.कु.चन्द्रकांता।

मोतिहारी-विहार। पतंजलि द्वारा नगर के आर्य समाज मंदिर परिसर में आयोजित आध्यात्मिक संस्थाओं की संगोष्ठी में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किये जाने पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अशोक वर्मा।

रावर्ट्सगंज-उ.प्र.। गुर्मा जेल में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी जेलर शिवचरण जी, ब्र.कु. पंचम सिंह, साई हॉस्पिटल की डॉ. अनुपमा सिंह, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. प्रतिमा तथा अन्य।

ख़्यालों के आईने में...

हँसता हुआ मन और
हँसता हुआ चेहरा
यही सच्ची संपत्ति है....!!
इस पर आयकर विभाग
की रेड कभी नहीं
पड़ती....!!

किसी ने गौतम बुद्ध से
पूछा, आप बड़े हैं, फिर भी
नीचे बैठते हैं!
बुद्ध ने बहुत ही खूबसूरत
जवाब दिया..
नीचे बैठने वाला इंसान
कभी गिरता नहीं।

दिल्ली-लोधी रोड। ओएनजीसी लि. में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में 'प्रकृति के साथ सद्भाव' विषयक कार्यक्रम कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष तथा प्रतिभागी।

आबू रोड-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर रॉयल राजस्थान पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को योगा कराते हुए ब्र.कु. दिलीप,शांतिवन। समूह चित्र में स्कूल की प्रिन्सीपल मिनाक्षी, ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. कृष्णा तथा ब्र.कु. राकेश,शांतिवन व अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
mediabkm@gmail.com,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

कई बार सभी कहते हैं कि मेरी हालत आजकल ठीक नहीं चल रही है, इसका अर्थ यही हुआ कि इसके पहले आपकी हालत ठीक थी। उस समय आपने अपने ऊपर ध्यान दिया या नहीं! आज उसे फिर सोचकर वही वाली ऊर्जा यदि फिर से डाली जाए तो हालत पुन: सामान्य हो सकती है। हम सभी जिस हालात में होते हैं, उस हालात को बार-बार कोसते हैं, और जितना हम कोसते हैं, उतना ही वो हालत ज़्यादा खराब होती चली जाती है।

कोई भी व्यक्ति जीवन को सामान्य तरीके से ही शुरू करता है। अगर वो असामान्य बनती जा रही है, तो कहीं न कहीं कुछ हमसे गलती हो रही है। आपको जानकर हैरानी होगी कि हमारे मन में 95 प्रतिशत बातें अनावश्यक होती हैं और आती हैं। अब अगर इसका एक उदाहरण कम्प्युटर को लिया जाए, और उसके साथ जोड़ा जाये तो, हम कह सकते हैं कि अगर कम्प्युटर में ज़्यादा फाइलें हैं, या फिर स्पेस कम है, तो वो स्लो चलेगा। वैसे ही अगर हमारे मन में बहुत सारी बातें चल रही हैं, तो इसका अर्थ ये हुआ कि हमारा मन स्लो हो गया है। आज जिनको भी नींद की समस्या है, डिप्रेशन है, टेंशन है, या फिर डायबिटीज़ है, उसका एक ही कारण है व्यर्थ सोचना। हमारा कार्य मन

को उन विचारों के साथ बांधना है, जिन विचारों से हमें सुख मिले, और अभी भी आपको सुख मिल रहा है, ऐसा नहीं है कि आप दु:खी हैं।

मन की जो क्रियाशीलता है, उसको यदि हम एक चक्की की भांति लें, जिसके अंदर गेहूँ का दाना या चने का दाना डालते हैं तो उसका आटा बाहर आता है, तो उसको खाने के बाद हमें ताकत मिलती है, वैसे ही अगर हम अपने मन रूपी चक्की में उन बातों को डालें जिनसे हमें ताकत मिलती है, तो कुछ दिनों में मन भी शक्तिशाली हो जाएगा।

वैज्ञानिक रिसर्च कहता है, कि रात को दस बजे के बाद हमारे मन की ग्रहण करने की शक्ति बढ़ जाती है। उस समय उसको जो ग्रहण करा दिया जाये वो उसका अपना हो जाता है, और ये प्रक्रिया सुबह आठ बजे तक चलती है। आजकल की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में सभी इस बात से पूर्णतया अंजान हैं कि हम क्या कर रहे हैं। अब एक-एक को घर पर जाकर तो ये बात समझाई नहीं जा सकती, लेकिन जागरुकता की थोड़ी बहुत ज़रूरत है। जागरुकता इस बात की, कि मुझे सोचना क्या है, समझना क्या है, करना क्या है, रहना कैसे है, खाना कैसे है आदि आदि।

मन चमत्कार अवश्य कर सकता है, यदि जीवन सामान्य जागरुकता के साथ जिया जाये। हम प्रेरणादायी कुछ बातें युट्यूब पर देख लेते हैं, वाट्सएप्प पर पढ़ लेते हैं, लेकिन उससे परिवर्तन तो नहीं होता। परिवर्तन इसलिए नहीं होता, क्योंकि इतने हलचल में मन उसको भी सामान्य तरीके से लेता है, थोड़ी देर के लिए अवेयर होता है, फिर भूल जाता है। तो करना क्या है, मन को बार बार बार बार याद दिलाना है कि भाई! अगर तुमको सच में अपनी विपदाओं से छुटकारा पाना है तो सिर्फ वो करो जो तुम्हारे लिए ज़रूरी है, वो ना करो जो व्यर्थ है। तभी आप अपने जीवन को सामान्य ज़िन्दगी से बेहतर ज़िन्दगी की ओर ले जा सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-21-2017

1		2			■	3		4	
	■	5	6	7			■		■
8	■	9			■		■	10	
11					12		13		■
	14		15			■			16
■	■	17				■		■	
18		19		■	20	21			
22	23		24		■		25	26	
27				■	■	28			■
29		30							■

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. मुझको....देने वाले बाबा मेरे (3)
2. चलना, आरंभ करना, निकलना (3)
3. हम बच्चों को साथ ले जाने....नवाज़ी बाबा आया है (4)
4. आस्तिक लोग भगवान के आगे....होते हैं (5)
6. निरहंकारी बाबा बच्चों को....करते हैं (3)
7. स्वर्ण, सोना, पीली धातु (3)
8. बाप की याद में रह माया....पर जीत पानी है (3)
9. साध्वी, चर्च की देखरेख में लगी महिला (2)
12. सवेरा, प्रात:काल, सूर्योदय (3)
13. शिव बाबा रोज़....अपने बच्चों से मिलते हैं (5)
15. आलस्य में माया....लगाती है (2)
16. सूक्ष्म, मनसा सेवा में....नहीं आती (4)
18. श्री राधे ही स्वयंवर बाद....श्री लक्ष्मी कहलाती हैं (4)
19. स्वर्णिम दुनिया में....माड़ियाँ प्राप्त होती हैं (3)
21. मायावी रावण को शिव शक्तियों ने....है (4)
23. बापदादा के बनाये गये....पर हमें चलना है (3)
24. प्रकाश, उज्जवल, स्वच्छ (3)
25. प्रभात, सूर्योदय काल, लालपन (3)
26. अधिक, ढ़ेर सारा, काफी (3)
28. चार पहिया वाला वाहन (2)

बायें से दायें

1. स्वर्णिम दुनिया में आत्मायें....होती हैं (5)
3. प्रतिदिन 8 घंटा बाप की याद में रहने की ....करनी है (4)
5. जगह, क्षेत्र, दर (3)
7. ....क्लेश मिटाओ पाप हरो देवा (3)
9. सिर झुकाना, भक्तजन देवी देवताओं को....करते हैं (3)
10. तेजोमय, चमकदार, प्रकाशवान (2)
11. विस्तार से बताना, बखान करना (3)
13. डूबना, छिप जाना, खो जाना (2)
14. ....का याद प्यार और नमस्ते (4)
17. किसी कीमत पर श्रीमत की....नहीं करनी है (3)
18. ....परमत पर नहीं श्रीमत पर चलना है (4)
20. पुरुषार्थ में....होना माना अपने भाग्य को लकीर लगाना (4)
24. स्वदर्शन....फिराते रहो (2)
26. घाट, किनारा, पाट (2)
27. दिव्य गुणी आत्माओं का रहन-सहन.... होता है (3)
28. विकर्मों की....से बचकर रहना है (3)
29. एक कड़वा वृक्ष, औषधिय पेड़ (2)
30. चढ़े तो चाखे प्रेम रस गिरे तो.... - ब्र.कु. हरिशंकर यादव,वाराणसी

भीमताल-उत्तराखण्ड। 'स्वाध्याय योग शिविर' का उद्घाटन करते हुए विधायक राम सिंह कैड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर महेश जी, ब्र.कु. सुषमा, ब्र.कु. मनोरमा तथा अन्य।

दिल्ली-पाण्डव भवन। करोल बाग क्षेत्र के निगम पार्षद राजेश लावडिया से ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. पुष्पा तथा बी.जे.पी. के अन्य विशिष्ट कार्यकर्ता।

रेवदर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शैल,मंडार। योगा कराते हुए ब्र.कु. बोबिन्दर,माउण्ट आबू तथा अन्य संस्थाओं के सदस्य। सभा में योगा करते हुए एस.डी.एम. शैलेन्द्र सिंह, तहसीलदार, वी.डी.ओ., थानेदार, डॉक्टर्स, सरपंच तथा शहर के अन्य गणमान्य लोग।

लुधियाना-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर रोज़ गार्डन में योगा करते हुए मेयर एस. जी.एस. गोहलवारिया तथा शहर के भाई बहनें।

आगरा-कमला नगर। व्यसन मुक्ति दिवस पर पुरुषोत्तम दास सावित्री देवी कैंसर केयर एंड रिसर्च सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में राजयोग के बारे में बताने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्योत्सना, डॉ. पारुल अग्रवाल तथा अतिथिगण।

करहल-उ.प्र.। विकास खण्ड स्तरीय किसान गोष्ठी में दीप प्रज्वलित करते हुए मृदुला यादव,ब्लॉक प्रमुख, डॉ. विनोद यादव,जिला कृषि अधिकारी, अतहर वारसी,वैज्ञानिक,फसल उत्पादन तथा ब्र.कु. निधि।

गरिमामयी दादी जी

मनीषियों की फहरिस्ट में बहुतों के नाम शामिल हैं, लेकिन उन नामों की चमक दिन ढ़लने के बाद ढ़लती चली गई। लेकिन कुछ ऐसे मनीषि भी हुए इस धरती पर, जिन्होंने अपने लिए ना जीकर विश्व सेवार्थ जीवन को जिया और ऐसा जिया कि जाने के बाद भी उनके बारे में उनकी जीवन गाथा कहते मुख नहीं थकते।

दादी के बारे में आजतक का जो मेरा अनुभव कहता है, कि दादी जी स्वयं की उन्नति में पूरे विश्व की उन्नति समझती थीं। जिस संस्था से दादी जुड़ी हुई थीं, उस संस्था की मान-मर्यादा का सम्पूर्ण ध्यान दादी जी को रहता था। दादी जी कहते, कि अगर संस्था का एक व्यक्ति कुछ गलत कहता है या करता है, तो उसके छींटे स्वयं पर तो पड़ते ही हैं, साथ साथ पूरे संस्था पर भी पड़ते हैं। एक बार दादी जी हम सबको क्लास करा रहे थे, तब उन्होंने एक बात कही कि जो परमात्मा के सेवाधारी बच्चे हैं, जो परमात्मा के कार्य में अपना पूरा जीवन दे चुके हैं, उन्हें अपना जीवन तलवार की धार समझकर जीना चाहिए। अगर उसमें इधर उधर थोड़ा सा भी हिले तो तुरंत कट जायेंगे। वो कहतीं, कि हम आपसे एक अनुरोध करते हैं, कि चाहे कुछ भी हो जाए, लेकिन जिस जीवन को आपने अपनाया है, उसे किसी भी कीमत पर किसी के साथ समझौता करके नष्ट नहीं करना है। हमारा जीवन दूसरों के लिए मिसाल तब बनेगा जब हम दुनिया की लोक लाज छोड़ उस परलोक की चिंता करेंगे। जो इस लोक की चिंता करता है, उसको परलोक का सुख नसीब नहीं होगा, अर्थात् परमात्मा का अतीन्द्रिय सुख उसे नहीं मिल पायेगा। इस बात को समझने में हमें थोड़ा वक्त ज़रूर लगा, लेकिन अब समझ में आ गया कि किसी को यदि अपने जीवन से प्रेरणा देनी है, तो अपना सौ प्रतिशत उस कार्य में लगा देना है। क्योंकि दुनिया में भी लोग एक छोटी नौकरी लेने के लिए अपना सर्वस्व लगा देते हैं, किंतु हमको तो पूरे विश्व पर राज्य करना है, तो अपना सबकुछ, नि:स्वार्थ भाव से झोंक देना है। कहना आसान है, करना मुश्किल है ऐसा लोग कहते हैं, लेकिन हमारा करना लोगों को कुछ कहने के लिए मिसाल बन जाये, कि कर्म अगर देखना है तो इन लोगों का देखो। दादी जी को देखने के बाद कर्म को प्रैक्टिकल में करने की प्रेरणा बहुत आती थी। शुरू में दादी से जब हम मिले तो उनके प्रकम्पन हमें कुछ अलग करने

की प्रेरणा दे गये। अभी दादी के एक एक कर्म की गाथा अपने वरिष्ठ भाई बहनों से जब हम सुनते हैं, तो हमें समझ में आता है कि दादी जी तो एक सम्पूर्ण मानवता को अपने आप में समेटे हुए थे। दादी जी नियमित रूप से समय पर हर कार्य को अंजाम देते थे। उनका हर कर्म एक इतिहास बन जाता था।

एक बार की घटना है कि दादी जी किसी वी.आई.पी. से मिल रहे थे, बातचीत कर रहे थे, तो उसमें दादी ने उनसे पूछा कि आपको यहाँ आकर कैसा लगा, तो उस भाई ने बोला कि हमें सारा कैम्पस घूमने के बाद उस व्यक्ति से मिलने की इच्छा हुई जो इस कैम्पस का

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

चीफ है। अब मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यहाँ की गतिविधियाँ और कार्य इतने अच्छे क्यों चल रहे हैं, क्योंकि आप बहुत अच्छे हैं, आपकी तरंगों को मैं अनुभव करके कह सकता हूँ कि आपके परिवार में कैसे बिना कुछ कहे, सभी कार्य को करते चले जा रहे हैं। तो कुल मिलकर हम यह कहना चाहते हैं कि दादी जी का जीवन एक प्रैक्टिकल जीवन था, उन्होंने सभी को दिल से माना, दिल से प्यार किया, बात-बात में ही सबको शिक्षा दे देते थे, और ये भी कहते कि चाहे हमारा कुछ भी चला जाये, लेकिन हमारे मन की शांति नहीं जानी चाहिए। ऐसी हमारी प्यारी दादी की हमें जो थोड़ी बहुत पालना मिली, उसके आधार से हम अपने जीवन को सफल बना रहे हैं, उन्हें हमारी तरफ से इतना सुंदर जीवन बनाने की प्रेरणा देने के निमित्त बनने हेतु शत शत नमन।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं ज्ञान में चल रही हूँ। पारिवारिक तथा व्यवहारिक हालात अच्छे न होने के कारण समस्याएँ हावी हो जाती हैं, ऐसे में मैं क्या करूँ?

उत्तर: संसार में ये समस्याएँ घर-घर में बढ़ती जा रही हैं और ऐसा आभास हो रहा है कि कुछ ही वर्ष में ये दुनिया मेन्टल हॉस्पिटल के रूप में दिखाई देने लगेगी। इसका कारण है बढ़ता पापकर्म, अहंकार व क्रोध, और मनुष्य के अंदर धधकती हुई काम-वासना। आपके जो बच्चे हैं, आपको तो यही सत्य ज्ञात है कि ये मेरे बच्चे हैं, परंतु यह भी सत्य है कि वे 63 जन्मों का पाप-पुण्य भी अपने साथ लाये हैं। उन पर कलियुग का भयानक प्रभाव भी है। यदि आपने भी अपनी स्थिति बिगाड़ ली तो परिस्थितियाँ और भी बिगड़ जाएंगी। ये तो ऐसे ही होगा जैसे बीमार को देखकर डॉक्टर भी बीमार हो जाए। इसलिए स्वयं को सम्भालो। यदि आप चिन्ता व परेशानियों की अग्नि में जलती रहीं तो वे भी जलकर भष्म हो जाएंगे। वे जलेंगे काम की अग्नि में व समस्याओं की अग्नि में। याद कर लो-स्व-स्थिति श्रेष्ठ तो परिस्थितियाँ कुछ भी नहीं, तथा स्व-स्थिति श्रेष्ठ होगी स्वमान से। पहले स्वयं को हल्का करो....कौन मुझे साथ दे रहा है, बार-बार याद करो....मन के बोझ बच्चों के भाग्य पर व बाबा पर छोड़ दें। फिर दोनों समय भोजन बनाते हुए एक सौ आठ बार याद करो, मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। इससे आपका मन भी शांत होगा व भोजन भी पवित्र हो जाएगा। दस-दस मिनट तीन बार अपने घर में बैठकर कॉमेंट्री से योग करो। तीन मास तक ये दोनों काम करो। साथ में एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन प्रतिदिन करो। याद रहे-समस्याएँ आने पर अमृतवेला उठना व मुरली सुनना छोड़ देना, सबसे बड़ी गलती है।

प्रश्न: मुझे यह जानना है कि एकाग्रता बढ़ाने के लिए किन-किन धारणाओं की आवश्यकता है व हमें क्या-क्या त्याग करना चाहिए? मैं एक विद्यार्थी हूँ। पढ़ाई व राजयोग दोनों में आगे जाना चाहता हूँ।

उत्तर: एकाग्रता बढ़ाने के लिए मन में श्रेष्ठ विचारों का होना आवश्यक है तथा बुद्धि पूर्णत: स्वच्छ रहे।आज टी.वी. चैनल्स ने, अनेक गंदी पत्र-पत्रिकाओं ने तथा फिल्मों ने मनुष्य की बुद्धि की स्वच्छता को नष्ट कर दिया है। इसलिए विद्यार्थी को इनसे जितना हो सके बचना चाहिए।

बुरे साथियों का संग करना, बढ़-चढ़कर उनके मध्य बातें करना व कुछ गलत आदतें सीखकर युवक एकाग्रता को नष्ट कर देते हैं, इनसे बचना चाहिए। जो लक्ष्य जीवन में लेकर चले हैं, उस पर सम्पूर्ण रूप से ध्यान हो। पढ़ाई में अच्छे अंक लाने हैं, तो बस इधर-उधर न देखें। राजयोग में कुशलता पानी है तो अन्तर्मुखी रहें, खान-पान शुद्ध हो, चित्त सरल रहे, व्यर्थ बातों में रहने की रुचि न हो, हर बात को सहज भाव से लें और सवेरे उठकर योगाभ्यास अवश्य करें।

प्रश्न: मैं मानसिक रूप से कमज़ोर होती जा रही हूँ। मैं मृत्यु से बहुत डरने लगी हूँ। अकेली रहना पसंद करती हूँ। मुझे डिप्रेशन सा हो रहा है। मैं दूसरों को देखती हूँ कि मृत्यु तो उनकी भी होनी है, पर वो तो बड़े खुश हैं तो मैं सोचती हूँ कि मैं खुश क्यों नहीं रहती? मैं इन सबसे मुक्त रहना चाहती हूँ और अपने मन को सशक्त बनाना चाहती हूँ, कृपया कुछ उपाय बतायें?

उत्तर: संसार में मानसिक रोग दिनों-दिन बढ़ते जा रहे हैं। इसका कारण केवल वर्तमान ही नहीं, लेकिन पूर्व जन्मों से भी जुड़ा है। पूर्व के 100-200 वर्षों में कइयों ने ऐसी गलतियाँ कर ली हैं कि उनके प्रभाव से भी मन की शक्ति क्षीण पड़ गयी है। वर्तमान में भी अनेक युवकों के ब्रेन काफी निर्बल हो गए हैं और उस पर पड़ने वाला विभिन्न प्रकार का प्रेशर उन्हें और भी कमज़ोर बनाता जा रहा है। सभी युवकों को ध्यान रखना चाहिए कि प्रेशर और तनाव के कारण ज़्यादा सोचने की आदत और नेगेटिव सोचने की आदत उनमें मानसिक रोगों को जन्म दे रही है। सभी को चाहिए कि बहुत सहज रूप से जीवन की यात्रा तय करें। अपनी कामनाओं को कम करें और अपनी खुशी के लिए दूसरों की ओर न देखें। याद रखें किसी भी मनुष्य की सभी कामनाएँ पूर्ण नहीं होतीं। इसलिये उसे कामनाओं का गुलाम नहीं होना चाहिए। जीवन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, बातों का महत्व बहुत कम है। हमारी खुशी और शांति का महत्व ज़्यादा है। इसलिये आप छोटी-छोटी बातों को दिमाग में न रखकर अपने जीवन में खुशियाँ बढ़ायें। राजयोग से स्थायी खुशी प्राप्त होती है। ईश्वरीय ज्ञान हमें जीवन जीना सिखाता है। तो आप रोज़ सवेरे उठते ही 108 बार लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ। इससे आपको नींद का सुख प्राप्त होगा और ब्रेन को पवित्र वायब्रेशन्स प्राप्त होंगे। आप अपने ब्रेन को कभी भी 10 मिनट एनर्जी दें और दिन में कई बार पानी चार्ज करके पीयें। पानी इस संकल्प से चार्ज करके पीयें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। ये काम आप 3 मास तक करें और कोशिश करें कि आप अकेले ना रहें। रोज़ ईश्वरीय महावाक्य सुनें और दूसरों को ज्ञान देने की सेवा में भी कुछ समय लगायें। ऐसा करने से आपका मन पूर्णतया स्वस्थ हो जाएगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

हर चीज़ हमारे अनुसार नहीं हो सकती

गतांक से आगे...

प्रश्नः- बाहर निकले तो ट्रैफिक पर भी तो चिढ़ होती है। जहां से प्रक्रिया शुरू हुई और जैसा आपने कहा कि कम्प्यूटर पर कार्य भी करो तो भी चिढ़ होती है।

उत्तरः- आप कोई कार्य करने के लिए कम्प्यूटर पर बैठे और कम्प्यूटर चालू नहीं हो रहा है तो हमारे मन में किस प्रकार के थॉट आते हैं कि चालू क्यों नहीं हो रहा है, इतना समय क्यों लग रहा है। अब उसको तो जितना समय में चालू होना है वह तो उतना समय लेगा ही, लेकिन उतनी देर में हमने क्या कर दिया? अपने माइंड को परेशान कर दिया। अच्छा आज नेट कनेक्शन बहुत स्लो है। आपने एक ईमेल भेजा, वो गया ही नहीं, तो हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि हर कार्य हमारे अनुसार नहीं चलता है, वह अपनी ही गति में चलेगा।

प्रश्नः- अगर हमारा फोन खराब हो जाता है तो हम क्या कहते हैं कि हमारा आज का दिन ही खराब हो गया।

उत्तरः- दिन तो कुछ भी खराब नहीं है। कम्प्यूटर भी अपनी ही स्पीड से चलेगा, नेट भी अपनी ही स्पीड से काम करेगा, मेरी गाड़ी के आगे जो गाड़ी चल रही है वो अपनी ही स्पीड से चलेगी, हाँ, मैं उनकी स्पीड को देखते हुए गुस्से में आ सकती हूँ। लेकिन उससे उसकी स्पीड बढ़ नहीं जायेगी, लेकिन मेरी हार्ट की स्पीड निश्चित रूप से बढ़ जायेगी और वो मेरी एनर्जी को नष्ट करेगा। मान लो कई लोगों को आदत होती है कि बॉलपेन को हाथ में लेकर टक-टक करते रहेंगे। अब वो उनकी आदत है, लेकिन हम सुन-सुन के, उसको देख-देख कर गुस्सा होते रहते हैं। कितनों की आदत होती है कि वो कुर्सी पर आगे-पीछे, आगे-पीछे करते रहेंगे। अगर हमारी एनर्जी इतनी छोटी-छोटी चीज़ों के लिए ऐसे ही नष्ट हो जाने वाली है तो हम स्थिर नहीं रह पायेंगे। अगर वो जो इस तरह से कर रहे हैं, अगर आपको उससे बहुत ज़्यादा तकलीफ हो रही है तो आप प्यार से उनको एक बार बोल सकते हो या फिर आप भी उनके साथ-साथ ही टक-टक कर सकते हो।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्नः- क्रोध हमें इन चीज़ों पर आ रहा है और ये कहा जाता है कि इसके पीछे बेसिकली कोई और वजह होती है जिससे वो इरिटेशन निकल रही होती है, तो इसके पीछे कौन-सी वजह हो सकती है?

उत्तरः- ज़रूरी नहीं है कि इसकी कोई और वजह हो, क्योंकि कई लोग वो होते हैं जिनको हम जानते भी नहीं हैं, आप ऑफिस में किसी के साथ बैठे हो, आप मीटिंग में किसी के साथ में बैठे हो, आप उनको जानते हो लेकिन उनकी कोई न कोई आदत, उनका कोई न कोई व्यक्तित्व आपके व्यक्तित्व के साथ मैच नहीं करता है, फिर वो आपको क्रुद्ध करता रहता है। जैसे हमलोग कार्यशाला करते हैं तो प्रोग्राम की शुरुआत में ही बोल देते हैं कि आप लोग अपने-अपने मोबाइल का स्वीच ऑफ कर दें या साइलेंट मोड पर डाल दें। यह तो साधारण-सी बात है कि हर प्रोग्राम के प्रारंभ में आप ऐसा बोलेंगे ही। इससे ये हो सकता है कि कम से कम एक मोबाइल नहीं बजेगा। शुरू-शुरू में जब किसी का मोबाइल बजता था तो हम सोचते थे कि क्या इनको समझ में नहीं आ रहा कि मोबाइल का स्वीच ऑफ रखना है। खुद भी परेशान होते हैं और दूसरों को भी परेशान करते हैं। फिर मैं कहती हूँ कि देखो एक की वजह से इतने लोगों का ध्यान दूसरी ओर गया। यह हमारी इरिटेशन है। अब एक बार हुआ, दो बार हुआ, तीन बार हुआ चलो चार बार हुआ, और हर समय ही ऐसा होगा तो मैं गुस्सा हो जाती हूँ। - क्रमशः

स्वास्थ्य — विभिन्न बीमारियों में तेजपत्ते के फायदे

कई लोग समझते हैं कि तेजपत्ता सिर्फ सब्जी बनाने के काम आता है। जबकि ऐसा नहीं है। तेजपत्ता पूरी तरह से औषधीय गुणों से भरपूर है। इसमें प्रचुर मात्रा में एंटी-ऑक्सीडेंट, कॉपर, पोटैशियम, कैल्शियम, सेलेनियम और आयरन पाए जाते हैं। यह सभी हमारे शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए बहुत ज़रूरी हैं। आज हम यहां आपको बताएंगे कि तेजपत्ता डायबिटीज़ को सही करने के साथ ही हमें अन्य कई गंभीर बीमारियों से भी छुटकारा दिलाता है।

डायबिटीज़ के लिए रामबाण

डायबिटीज़ काफी हद तक हमारे लाइफ-स्टाइल से जुड़ी बीमारी है। कई बार जैनेटिक समस्या होने के चलते भी यह रोग हो जाता है। यह बहुत गंभीर रोग है, लेकिन अगर इससे बचने के लिए रोज़ छोटे-छोटे कदम उठाएं तो इस बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है। डायबिटीज़ में तेजपत्ता एक दवाई की तरह काम करता है। अगर इसका खाने में या उबाल कर नियमित सेवन किया जाए तो डायबिटीज़ को कंट्रोल में रखा जा सकता है। सुबह तेजपत्ते के नर्म नर्म 5 या 6 पत्तों को तोड़ लें (जो हल्के हरे रंग के होते हैं) और उसको खाली पेट धीरे धीरे चबा लें। ऐसा 2 या 3 महीने करते रहने से आपको काफी फायदा होगा।

पथरी में है फायदेमंद

अनियमित और दूषित खानपान के चलते आजकल पेट में पथरी होना एक आम समस्या हो गई है। इस रोग में पेट में बहुत दर्द होता है। पथरी से परेशान लोगों के लिए तेजपत्ता बहुत काम की चीज़ है। इसके सेवन से पथरी का काफी हद तक कटाव होता है। तेजपत्ते को उबाल कर या खाने में सेवन किया जा सकता है।

नींद की कमी होती है दूर

अत्यधिक तनाव और चिंता के चलते नींद की कमी होना लाज़मी है। एक सर्वे के अनुसार जो महिलाएं घर में रहती हैं उन्हें अधिक तनाव की समस्या रहती है। क्योंकि वह अपनी इच्छाओं और बातों को ज़्यादा शेयर नहीं कर पाती हैं। तेजपत्ते के सेवन से नींद की कमी दूर होती है। रात को सोने से पहले तेजपत्ते के तेल की कुछ बूंदों को पानी में मिलाकर पीने से अच्छी नींद आती है।

दर्द में दिलाए राहत

कई बार अचानक हमारे शरीर के अंगों में दर्द होने लगता है। हो सकता है इसका कारण तनाव और थकान हो। दर्द में राहत के लिए भी तेजपत्ता एक कारगर उपाय है। इसके अलावा अगर तेज़ सिर दर्द हो रहा हो तो भी इसके तेल से मसाज करना अच्छा रहता है।

पाचन क्रिया होती है दुरुस्त

ऑफिस और कॉलेज की जल्दबाज़ी में कई लोग समय पर सुबह का नाश्ता नहीं कर पाते हैं। जिसके चलते उन्हें बाद में जो मिलता वो खा लेते हैं। इस प्रक्रिया का सीधा असर हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। जो लोग अक्सर ऐसा करते हैं उनकी पाचन क्रिया काफी कमज़ोर हो जाती है। तेजपत्ते का सेवन पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है। पाचन से जुड़ी अन्य समस्याओं में भी तेजपत्ता काफी फायदेमंद है। चाय में तेजपत्ते का इस्तेमाल करने से कब्ज, एसिडिटी और मरोड़ जैसी समस्याओं से राहत मिलेगी।

जमशेदपुर-झारखण्ड। 'महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम' के दौरान समूह चित्र में श्रीमति आभा महतो,सांसद, श्रीमति पूनम बिघ,समाधान संस्था,बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, बाबू सिंह,प्रेसीडेंट,झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, ब्र.कु. उर्मिला,माउण्ट आबू, ब्र.कु. अंजू तथा अन्य।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। मातेश्वरी जगदम्बा के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. हर्षा बहन व ब्र.कु. तृप्ति के साथ ब्र.कु. भाई बहनें।

दरभंगा-बिहार। कमिश्नर आर.के.खण्डेलवाल को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अंजू।

कायमगंज-उ.प्र.। 101 जोड़ों के विवाह कार्यक्रम में ब्र.कु. मिथलेश को सम्मानित करते हुए गायत्री परिवार के उपाध्यक्ष सुरेन्द्र गुप्ता एवं सदस्य। साथ हैं कु. प्रियंका, बहन सोनी तथा अन्य।

परबतसर-जयपुर राजापार्क। 'विशाल नशा मुक्ति शिविर' में सम्बोधित करते हुए एस.डी.एम. चन्दावत जी। साथ हैं गणमान्य अतिथिगण।

आस्का-ओडिशा। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस के कार्यक्रम में रोहित कुमार सेठी,एक्ज़ीक्युटिव इंजीनियर इलेक्ट्रिकल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवाती।

आगामी नये भारत की प्रथम भारती 'दादी'

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत एक ऐसा करिश्माई व्यक्तित्व जिसने आध्यात्मिकता की मशाल लेकर जन-जन के हृदय में परमात्म प्यार की अलख जगाई, उन्हें उन अनुभूतियों से जगाया जो वे सांसारिक दुनिया में करते रहे। समस्त संसार में शिव-सागर के पद्चिन्हों पर चल भावी दुनिया का झंडा भवसागर में फँसे हुए लोगों के दिलों पर गाड़ा और कहा उठो, जागो, फिर न रुको, क्योंकि स्वर्णिम सवेरा...आ ही रहा है... ऐसा कह एक श्वेत वस्त्रधारिणी ने शांतिदूत बन शांति का परचम सारे गलोब पर लहराया, आज भी वे हम सबके मध्य अपनी उन्हीं शुभ आशाओं के साथ जीवंत अभिनय कर रही हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्थान, जिसकी स्थापना स्वयं निराकार परमात्मा द्वारा सन् 1936 में हुई।

नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने सिद्ध किया कि नारी शक्ति-स्वरूपा है। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लगभग 137 देशों के लाखों भाई-बहनों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करूणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया।

धरा पर हुई महान आत्मा अवतरित

दिव्यता की मूर्ति अनन्य आत्मा का जन्म सन् 1 जून 1922 में हैदराबाद सिन्ध(पाकिस्तान) में हुआ। वह बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थीं। सन् 1937 में विश्व के पालनहार, सबके परमपिता परमात्मा शिव ने हीरे जवाहरात के प्रतिष्ठित व्यापारी दादा लेखराज को परमात्मा के सत्य स्वरूप एवं भावी नई दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया। हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री रमा देवी 14 वर्ष की तरुण अवस्था में इस संस्था के संस्थापक के संपर्क में आयी। रमा देवी के दूरदर्शी एवं भविष्य वक्ता लौकिक पिता को अपनी पुत्री के भावी जीवन के संकेत प्रारंभ से ही मिल गये थे। उन्हीं के अनुरूप यही रमा देवी आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति पर प्रकाशमणि कहलाईं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्कालिन जनरल सेक्रेट्री डॉ. परवेज़ द कुलर दादी प्रकाशमणि को पीस मेडल प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

रत्नप्रभा दादी प्रकाशमणि ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रान्ति में अपने आप को प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनीं। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा ने छोटी आयु की दादी प्रकाशमणि तथा अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर अपना सबकुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने स्वयं को एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाश स्तम्भ बन कर उभरीं।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th July 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।